28S«!7S;Rules, dated the 29th Decern- , ber, I960, publishing the Appointment of Railway Tourist Agent Rules, 1980. [Placed in Library. *See No.* LT-199f}81.]

REPORTS OF THE COMMITTEE ON WELFARE OF SCHEDULED CASTES AND SCHEDULED TRIBES

श्री गनपत होरालाल भगत (महाराष्ट्र) : श्रीमन्, मैं आपकी अनुमति से अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के कल्याण संबंधी समिति के निम्नलिखित प्रतिवेदनों की एक-एक प्रति (अंग्रेजी तथा हिंदी में) सभा पटल पर रखता हूं :

(1) वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग) सैन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन-जातियों के लिए आरक्षण तथा रोजगार व्यवस्था के बारे में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के कल्याण संबंधी समिति (छठी लोक सभा) के तेंतालीसवें प्रतिवेदन में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की गयी कार्यवाही के बारे में चौथा प्रतिवेदन ।

(2) पेट्रोलियम, रसायन तथा उर्वरक मंत्रालय (पेट्रोलियम विभाग)—इंडियन आयल कारपोरेशन लिमिटेड (तेल शोधक कारखाने तथा पाइप लाइन प्रभाग) में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षण तथा रोजगार व्यवस्था के बारे में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के कल्याण संबंधी समिति (छठी लोक सभा) के चालीसवें प्रतिवेदन में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की गयी कार्यवाही के संबंध में पांचवां प्रतिवेदन ।

(3) रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) पूर्वोत्तर रेलवे में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लिये आरक्षण तथा रोजगार व्यवस्था तथा उन्हें छोटे मोटे ठेके दिये जाने के संबंध में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के कल्याण संबंधी समिति (छठी लोक सभा) के इकतालीसवें प्रतिवेदन में अन्तर्विष्ट सिफारिशों पर सरकार द्वारा की गई कार्यवाही के बारे में छठा प्रतिवेदन ।

CALLING ATTENTION TO A MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Reported Expenditure of Diesel for Organising the .Kisan Rally at New Delhi

[Mr. Deputy Chairman in I Chair.]

SHRI SHIVA CHANDRA JHA (Bihar): Sir, I call the attention o't the Minister of Petroleum, Chemicals and Fertilizers to the reported expenditure of diesel for organising the Kisan Rally at New Delhi on. 16-2-1981.

THE MINISTER OF PETROLEUM, CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI P. C. SETHI): Sir Hon'ble Shri B. D. Khobragade and other Members have drawn attention to the reported expenditure of diesel for organising the Kisan Rally at New Delhi on the 16th February, 1981.

Diesel is used for different purposes like agriculture, transportation, power generation, etc. The consumption o£ diesel varies from month to month influenced as it is by changes in weather conditions, agricultural re-

[Shri P. C. Sethi]

quirement, the availability of power etc. Accurate break-up of diesel consumption for each end-use is not available nor is it feasible to attempt to collect such date and analyse it meaningfully.

In the circumstances, it is not possible to give any figures of diesel consumption only on account of the Kisan Rally because no separate statistics in this regard can be available with the oil companies or their retail outlets (petrol pumps).

श्री शिव चन्द्र झा : उपसभापति महोदय, केवल मैं कुछ कहूं, सवाल पूछूं, मैं यह जरूर कहना चाहता हूं कि भारत अभी भी किसानों का देश है, 70 परसेंट अभी भी खेती पर निर्भर करते हैं बावजूद योजनाओं के, बावजूद इंडस्ट्रियलाइजेशन के । किसान हैं, खेतिहर मजदूर हैं और इस से सम्बन्धित छोटे किसान हैं, उन की समस्याएं अहम जरूर हैं इस में कोई शक नहीं और उन की समस्याओं को मुस्तैदी से हल करना भी जरूरी है और उन को बताना भी जरूरी है, हमारी योजनाएं पूरी नहीं हो सकती यदि उन के मसलों को हम ठीक से नहीं हल करें । यदि हम परम्परा को लें, किसानों के इतिहास को लें तो हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन गांधी जी के नेतृत्व में चम्पारन से शुरू हुआ था, किसान आन्दोलन से ही शुरू हुआ था । उस की तफसील में जाने की जरूरत नहीं, हम सब जानते हैं । बारदोली में वल्लभभाई पटेल को सरदार का खिताब मिला । उन की जीत हुई वह सरदार कहलाने लगे 1924 में । उस के बाद किसान आन्दोलन चलता रहा । 1970 में भूमि मुक्ति आन्दोलन भी चला जिसमें हम लोग भी गये, हम लोग भी गिरफ्तार हुए । मैं खुद गया था इन्दिरा जी के फार्म पर और अगस्त 70 में वहां मैं और अर्जुन सिंह भदौरिया दोनों गिरफ्तार हुए । यह चलता रहा । लेकिन जो कालिंग अटेंशन है, जो विषय यहां पर है वह यह है कि जो 16 फरवरी को दिल्ली में किसान रैली के नाम पर हुआ यदि मैं कहूं कि तमाशा था तो शायद ये लोग हल्ला करेंगे . . .

एक माननीय सदस्य : हल्ला नहीं कर रहे हैं, वह मान रहे हैं कि तमाशा था ।

SHRI J. K. JAIN (Madhya Pradesh): For a jaundiced eye, everything looks yellow. Mr. Piloo Mody, you know what he is saying.

श्री शिव चन्द्र झा : मैं तो कहता हूं कि तमाशा था, लेकिन अखबार वाले—हम लोग तो विरोधी दल के लोग हैं, अपने दृष्टिकोण से कहेंगे, इन को खराब लग सकता है—लेकिन कुछ अखबार वाले हैं जो आब्जेक्टिव व्यू लेते हैं, उन सबों का निचोड़ एक अखबार आया है । सिर्फ वह मैं पढ़ देता हूं । वह है इंडियन एक्सप्रेस फरवरी 18, 1981 का—

"All this for what? Did Mrs. Gandhi need this to prove her strength, having won decessively in last year's elections? To have put up this tamasha at so much cost at a time like this and then to call it a pilgrimage, as Mr. Vasantdada Patil does, is indeed the height of cynicism and irresponsibility."

यह हिन्दुस्तान का जो फोर्थ एस्टेट है, जो हमारे जनतंत्र का मुख्य खम्भा बना रहना चाहिए, उस की यह ओपीनियन है कि यह तमाशा था । संविधान के मुताबिक आजादी है तमाशा करने की भी । लेकिन सवाल आता है सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग का, पैसे के खर्चे का, जनता के पैसे का दुरुपयोग और अपव्यय । यह चिन्ता की बात हो जाती है । मंत्री महोदय खुद पहले आंकड़े बता दें कि उन की गाड़ी कितनी चली थी किसानों को लाने के लिए, लोगों को लाने के लिए, जितने मिनिस्टर हैं उन का ही एस्टीमेट दे दें, उन की गाड़ियां कितनी चली थीं, कितना पेट्रोल खर्च हुआ । वह साफ-साफ बता दें । प्रधान मंत्री जी की मशीनरी की बात तो अलग है । तो आप की गाड़ियां, आप की

सवारियां सरकारी हैं न कि पार्टी की। यह मैं मान लेता हूं कि किसानों को शिक्षित करना, उन को बताना, उन की समस्याओं को देखना आप का काम है, यह मैं मानता हूं। यह ठीक है और होता रहा है, मैं मानता हूं लेकिन आप का क्या कर्तव्य था। क्या आप को पावर थी कि वह सारी मशीनरी इस्तेमाल होती रहे। उस का दुरुपयोग होता था और कितना दुरुपयोग हुआ है इस के लिये इस्टीमेट अखबारों में आये हैं और वह भी सोमिंगअप करते हुए। उस में जो इंडियन एक्सप्रेस का है, उसे मैं पढ़ कर आप को सुना रहा हूं। इस में दिया हुआ है :—

1

"The amount spent on thi$_a$ stupendous manifestly state-managed ! affair is anybody's guess. According- ! lv to the police about 35,000 trucks and buses were used for the rally. If the average distance covered by each vehicle is conservatively put i at 200 kms. the total fuel cost alone must be Rs. 76.6 lakhs."

पैट्रोल में और डिजील में इस अखबार का कंजरवेटिव इस्टीमेट यह है कि करीब 75, 76 लाख का खर्चा हुआ।

श्री महावीर मेहरोत्रा (उत्तर प्रदेश) : पैट्रोल में या डीजील में ?

श्री शिव चन्द्र झा : पैट्रोल और डीजल दोनों में, जोड़ कर।

SHRI N. K. P. SALVE (Maharashtra): On a point of order. The Hon. Member is entitled to his question on the Calling Attention, but th$_e$ scope of the question itself is not clear, i.e. *to* call the attention of the Minister of Petroleum, Chemicals and Fertilizers to the reporter expenditure of diesel. Does it relate to the expenditure in-currd on diesel, or does it relate to the consumption of diesel? If it is expen- | diture on diesel and thereby as the Hon. Member is framing his question that it is the xnisutilisation of the government machinery etc., how is the Minister of Petroleum, Chemicals \ and Fertilizers responsible for it? Then, it should be Home Minister to come here and answer the Calling Attention. Shri P. C. Sethi is answerable for consumption of diesel. Sir, they are entitled to have their say. . . (In-*temtptions).*

श्री रामेश्वर सिंह (उत्तर प्रदेश) : मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है।

श्री उपसभापति : उन का प्वाइंट आफ आर्डर खत्म हो जाय, तब आप शुरू करिये।

SHRI N. K. P. SALVE: Sir, I am seeking your ruling on the question as to what is the precise scope of the subject. If you define the scope of the question, the questions will be framed within that. If long speeches are made about the unauthorised expenditure, involvement of government machinery, etc., I am sure Shri P. C. Sethi is not at all responsible he is not competent to reply to that question in any manner. *(Interruptions).* Therefore, Sir, I seek your ruling on this as to whether it is purely a question of consumption of diesel in which case he is the Minister concerned, or whether it is expenditure on diesel consumption—there I take that they are talking about expenditure unau-thorisedly incurred for buying diesel etc.—in which case he is not the Minister who can answer. May I know what is the scope of the question?

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI (Maharashtra): Sir, on a point" of order.

SHRI PILOO MODY (Gujarat): He is quite right about the 6cop$_e$ of the thing. There is something very confusing. None of us knows as to how much diesel was paid for.

SHRI ARVIND GANESH KUL-RARNI: My point of order is_________

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Are you saying anything on his point of order?

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: I am raising a point of order in connection with the discussion.

SHRI RAMANAND YADAV (Bihar): Sir, first you give a ruling on his point of order. *(Interruptions)*

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: What I want to say is that we, the Members of the opposition, as you are aware, are demanding a discussion on the Rally in the House. I do not know what is the phraseology mentioned by the Hon. Members. But I checked up with Mr. Rameshwar Singh just now. I said: "How is it that Kisan Rally can be discussed in this very narrow context?" Because whether the Minister is competent or not. I do feel that the Minister is quite competent—more than competent.

श्री रामानन्द यादव : इनका तो यह सबमिशन हो गया । पवाइंट आफ आर्डर तो नहीं है । (व्यवधान)

श्री अरविन्द गणेश कुलकर्णी : पूरा कहां हुआ है । आपने क्या समझा ? (व्यवधान)

SHRI J. K. JAIN: The notice is lor diesel.

SHRI N. K. P. SALVE: It is about consumption of diesel.

SHRI ARVIND GANESH KTJL-KARNI: I am talking about competence, you are talking about diesel. Why are you adding diesel to the competence?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him complete, please.

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: What I want to say is that the Minister is more than competent. But the narrow groove in which the Members have been put is not the proper way of discussing the Kisan Rally here. Anyway, the Chairman has admitted the Calling Attention Motion. I had also given a Calling Attention, but its scope was different. I would only request you that here is a Calling Attention in which we have to participate whose scope is very narrow; How to face this problem, I myself do not know. But this is the difficulty. So in today's Business Advisory Committee meeting, tills problem will have to be discussed again.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is a different matter.

SHRI ARVIND GANESH K.UL-KARNI: It is, not the Government which has admitted the Calling Attention. It is the Chair who has admitted it.

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Your point is clear. *(Interruptions)*

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: I am addressing you, Sir. Another kisan is unnecessarily addressing me. What I request you is, within this scope, whatever is possible, we might ask; but the point is that thi$_s$ is a diversion from the main issue of the Kisan Rally.

श्री रामेश्वर सिंह : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है । हम लोगों ने जो नोटिस दिया है . . .

श्री उपसभापति : यह बात आपको पहले रेज करनी चाहिये ।

श्री रामेश्वर सिंह : मेरी बात तो सुन लीजिए ।

श्री उपसभापति : आपकी बात ही सुन रहा हूं ।

श्री रामेश्वर सिंह : हम यह समझते हैं कि जो हमारे मंत्री हैं जो कंपिटेंट आदमी . . . (व्यवधान)

SHRI PILOO MODY: Why should we speak on his point of order? We can have our own. *(Interruptions)*

SHRI N. K. P. SALVE: It relates to jurisdiction.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him say whatever he understands by "competence."

श्री एन० के० पी० साल्वे : देखिये, कंपिटेंट के माने क्या हैं । एबिलिटी का सवाल नहीं है (व्यवधान)

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: But why are you replying?

SHRI PILOO MOPY: I would like to know whether he is Prime Minister's representative. He is trying to be in all positions except his own, which is that of. an ordinary Member of this House.

MR. DEPUTY CHAIRMAN; Please conclude.

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: Mr. Salve, I request you to listen quietly. Don't get provoked.

SHRI N. K. P. SALVE: I am not provoked. Sir, one thing has to be made clear because the hon. Members 4o not understand that "competence" is with reference to jurisdiction. He is to exercise jurisdiction over his Ministry. It has nothing t_0 do with ability. They are mixing up ability with competence.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let him say whatever he understands by ^'competence.".

श्री रामेश्वर सिंह : मेरा कहना यह है कि इसमें कोई दिक्कत नहीं है । कल सभापति जी ने कहा था कि शब्दावली में मत जाइए । किसान रैली पर डिसकशन यहां होगी । (**व्यवधान**) इस पर हम बहस करना चाहते हैं ।

श्री एन० के० पी० साल्वे : यही तो झगड़ा है । (**व्यवधान**)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Chairman has admitted this Calling Attention Motion on a subject that was given by the Hon. Members.

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: No.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let me complete. The essence of the Motion must be expressed here. I think they must have referred to the use of diesel and other things also. So he has included a wide range—"expenditure of diesel" in connection with the Rally. So far as the Rally is concerned, we are not going to discuss the Kisan Rally. That is not Government's job. The Government cannot reply for a party. Obviously that distinction should be maintained.

SHRI PILOO MODY: Should be maintained by the Government, or should we maintain it?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The fact is that the present Calling Attention Motion relates to "expenditure of diesel." I think this expenditure will include both things—the amount in terms of money and the quantity also.

SHRI PILOO MODY: It also in-eludes diesel trains.

श्री जे० के० जैन : मेरा प्वाइंट आफ आर्डर सुन लीजिए । इन्होंने जिस प्रकार से डीजल के बारे में कालिंग एटेन्शन दिया है कि कितना एक्सपैन्डीचर हुआ मैं इनसे यह निवेदन करूंगा कि जब इनकी किसान रैली हुई थी तो क्या इन्होंने मुरारजी देसाई के बाथरूम से पाइप लाईन लगा रखी थी ? शायद उसी पाइप लाइन से ये ट्रक और बसें चला रहे थे । उसका पहले जवाब दे दें ।

श्री उपसभापति : आप उन को क्यों डिस्टर्ब कर रहे हैं, उनको बोलने दीजिए ।

श्री शिव चन्द्र झा : उपसभापति महोदय, मैं कह रहा था ...(**व्यवधान**)

एक माननीय सदस्य : उपसभापति महोदय यह विषय जितने भी लिमिटेड रूप है उतना ही रहे । यह आपका काम है । हम लोग उस को बड़ा देते है उस को अन्ग-भन्ग करके जिस रूप मे लाते हैं यह तेखना आप का काम है ।

श्री उपसभापति : उनका दोष नहीं है । ...(**व्यवधान**) आप संक्षेप में कहिए । समय बहुत कम है । एक बजे

[श्री उपसभापति]

तक उसको खत्म करना है नहीं तो यह चला जायेगा हाफ इन हावर डिस्कशन के बाद । इस लिए मैं अनुरोध करता हूं कि संक्षेप में अपनी बात रखिये ।

श्री शिव चन्द्र झा : श्रीमन्, इतना समय तो आपने ही ले लिया । मैं संक्षेप में ही कह रहा हू ।

उपसभापति महोदय, डीजल का कितना दुरुपयोग हुआ , इसका एस्टीमेट है कि 35 हजार ट्रक और बसें आई जिन पर 75-76 लाख रुपया खर्च हुआ । स्पेशल रेल गाडियां चलाई गई थीं । उसका अलग हिसाब है । सारा टोटल खर्चा ले लें तो उसका और ही ऐस्टिमेट है । इकनामिक टाइम्स का हिसाब है कि आपके ट्रक वगैहरा में लगभग 100 करोड़ रुपये के करीब खर्च हुआ । 500 रुपया फी आदमी की रिटर्न फेयर लगाया जाये तो 20 लाख लोग आये हैं तो टोटल खर्चा 100 करोड़ का हुआ । उसी तरह से आपका दूसरा एस्टिमेट है हिन्दुस्तान टाइम्स अखबार का यह भी 100 करोड़ रुपये के करीब है । डक्कन हेरेल्ड का इस में हंड्रेड करोड़ है । आपका 100 करोड रुपये से ज्यादा , 200 करोड़ रुपये से भी ज्यादा घाटा हो जाता है । लाउड स्पीकर्स इस्तेमाल किये गये हैं, यह भी इस अखबार का है ।

श्री धर्म वीर : (उत्तर प्रदेश) इस से क्या मतलब है ? ... (**व्यवधान**)

श्री शिव चन्द्र झा : इस हिसाब से खर्चा कितना होता है ... (**व्यवधान**)

श्री धर्म वीर : मान्यवर, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है । मैं आप से यह जानना चाहता हूं कि यह जो माननीय सदस्य कह रहे हैं क्या वह डीजल से कन्सर्न रखता है ? यह किसान रेली से संबंधित है और अगर किसान रेली के बारे में इधर-उधर की बात लायेंगे तो इस का अंत नहीं होगा । मैं चाहता हूं कि कृपा करके आप इस बहस को वहां तक ही रखें जहां तक इसकी लिमिट है । ... (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : इतनी छूट माननीय सदस्य को है कि इधर उधर जा सकते हैं। अब आप समाप्त कीजिए। ... (**व्यवधान**)

श्री शिव चन्द्र झा : श्रीमन, कुरुक्षेत्र के ट्रक आपरेटर्स यूनियन ने रिसिस्ट किया वहां की पुलिस ने उनको प्रेशराइज किया कि 125 ट्रक दे दो । उसी तरह से राजस्थान की 1200 बसें ले ली गई जबरदस्ती । इसी तरह से हर राज्य से ट्रक और बसें उन्होंने लीं और उन पर पैट्रोल का कितना खर्च हुआ, डिजल का कितना खर्च हुआ , इसका हम अनुमान कर सकते हैं ।

रेलगाड़ी की बात जहां तक है, बताया गया है कि 130 गाड़ियां आई । उसका हिसाब लगायें तो एक करोड़ से लेकर दो करोड का खर्चा हुआ है । तो यह जो तमाशा दिल्ली में हुआ , उस तमाशे में और भी तमाशों की बात मैं बताता हूं। मैं रेडियो पर सुन रहा था । ... (**व्यवधान**) । वह भाषण कर रहीं थीं कि हम दुनिया को दिखाने आये हैं। मुझे एक हंसी आई, पहले तो हंसी आई ... (**व्यवधान**)

श्री प्रकाश महरोत्रा : यह तो डीजल के एक्सपैंडीचर के बारे में है , यह तो एनर्जी का एक्सपेंडीचर है । . . . (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : बीच में आप क्यों बोलते हो । झा साहब को बोलने दीजिए। ... (**व्यवधान**)

SHRI PILOO MODY: You are misusing the bell.

श्री शिव चन्द्र झा : उपसभापति, महोदय, मैं उस वक्त भाषण सुन रहा था यह रैली नहीं थी । ऐसा लग रहा था कि ये लोग दुनिया को दिखाने आये हैं । मुझे तो पहले हंसी आई . . . (व्यवधान) ।

श्रीमती सरोज खापर्डे (महाराष्ट्र) : आपको तो जरा-जरा सी बात पर हंसी आती है ।

श्री शिव चन्द्र झा : यह बात आपके लिए ठीक हो सकती है । जब प्रधान मंत्री जी बोल रही थीं तो ऐसा लग रहा था कोई नोसिखिया बोल रहा है . . . (व्यवधान) मुझ को तो ऐसा लगा कि सब को हटा कर प्रधान मंत्री बोल रही हैं । पंडित जवाहर लाल नेहरू भी बोला करते थे । लेकिन उनमें इस तरह की बात या इस तरह की गर्मी नहीं होती थी । इस तरह की वेरिटी के रूप में पंडित जी नहीं बोला करते थे . . . (व्यवधान) । एक तमाशे के रूप में वे वहां पर बोल रहीं थीं । उस वक्त दिल्ली में जगह जगह टेलीविजन सैट लगाये हुए थे । अगर सारी दिल्ली में इस प्रकार के सैट लगा देते तो सब लोग देख लेते । इस पर जो खर्च हुआ वह एक अलग चीज है । प्रधान मंत्री जी को किसानों के बीच में बोलने का पूरा अधिकार है । मैं यह नहीं कहता कि उनको किसानों के बीच में नहीं बोलना चाहिए । मैं जानता हूं कि पंडित मोती लाल नेहरू लैण्डलैस थे, पंडित जवाहर लाल नेहरू लैण्डलेस थे . . . (व्यवधान) लेकिन श्रीमती इंदिरा गांधी के पास मेहरौली में एक फार्म है । मैं नहीं जानता कि उसमें अट्टालिका बन गई है या नहीं . . . (व्यवधान)

श्री उपसभापति : आप यह दूसरा विवाद खड़ा कर रहे हैं ।

श्री शिव चन्द्र झा : श्रीमन्, आप जानते हैं कि हमारे देश में 60 प्रतिशत से भी अधिक लोग गरीबी की रेखा से नीचे रहते हैं । ऐसी हालत में मैं यह जानना चाहता हूं कि दिल्ली में यह किसान रैली के रूप में जो तमाशा किया गया है इस पर कुल कितना खर्च हुआ ? हमारे जैसे गरीब देश में इतने रुपये खर्च करके किसान रैली इस प्रकार से करना शोभा नहीं देता है । मैं यह नहीं कहता कि आप किसानों को कुछ न बताइये । मैं यह भी नहीं कहता कि आप यह उनको मत बताइये कि आप उनके लिए क्या कर रहे है ? आपने यह कहा है कि 25 प्रतिशत प्लान के खर्च का किसानों पर खर्च करेंगे । आपने ये सारे दावे किये है । मंत्री महोदय यहां पर बैठे हुये हैं । इस सरकार ने एक कम्पीटेन्ट मिनिस्टर को इनकम्पीटेन्ट बना दिया है । मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि आपके महकमें में इस रैली के लिए कितना खर्च हुआ ? आपके पास सारा हिसाब मौजूद है, आप बता सकते हैं कि किसान रैली पर आपके विभाग ने कितना खर्च किया ? पुलिस वालों पर जो खर्च हुआ, उसका भी हिसाब हो सकता है । मैं चाहता हूं कि आप यह बतायें कि टोटल खर्च कितना हुआ ? आप ये बातें पार्टस में बता सकते हैं ? डीजल पर जो खर्च हुआ, वह एक लिमिटेड सवाल है । यह कोई मुश्किल सवाल नहीं है । अगर आप कहते हैं कि इसका खर्च निकालना मुश्किल है तो इसका मतलब यह होगा कि आप मेरे सवाल को इवेड कर रहे हैं । मैं स्पष्ट रूप से जानना चाहता हूं कि कुल कितना खर्च हुआ, आपके मंत्रालय में कितना खर्च हुआ, प्रधान मंत्री के महकमें में कुल कितना खर्च हुआ ? आप सारे डीजल के खर्च का इस्टीमेट बताइये ।

SHRI PILOO MODY: Now we should call the Deputy Chairman to reply.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I cannot reply. He has already replied to his questions.

श्री पी० सी० सेठी : माननीय उपसभापति महोदय, जहां तक मूल प्रश्न का सवाल है, वह तो बहुत मेहदूद है कि किसान रैली के सम्बन्ध में चाहे डीजल की क्वांटिटी हो या डीजल का खर्चा हो, वह कितना हुआ, लेकिन माननीय सदस्य ने यह तय किया कि डीजल पर न बोल कर किसान रैली के सम्बन्ध में उन के मन में जो थोड़ी-सी जलन है उसका प्रदर्शन करें या उसको दिखाने का प्रयास करें ।

माननीय उपसभापति महोदय , जैसे आपने फरमाया पहली बात तो यह है कि यह इस तरह की किसान रैली नहीं थी जैसी की किसी साल गिरह पर कुछ वर्ष पहले बुलाई गई थी । माननीय उपसभापति महोदय, यह किसान रैली कांग्रेस आर्गेनाइजेशन ने किसानों को आमंत्रित किया था, और यह उस सिलसिले में हुई थी । माननीय सदस्यों को इतनी बड़ी किसान रैली देखकर जो अफसोस है और जो घबराहट है वह विचारणीय प्रश्न है । उससे पूर्व महाराष्ट्र में जो किसानों का मार्च कराया गया, उसमें कितना खर्चा हुआ, कितना भोजन लगा, कितना पैट्रोल लगा, कितना डीजल लगा, इसका कभी कोई हिसाब जानने की कोशिश नहीं की । जब इनको मालूम हो गया कि सरकार किसानों को गन्ने और उनके उत्पादन का अधिक मूल्य देने वाली है तो वाहवाही लूटने के लिए उन्होंने किसानों को घेरकर उनका प्रदर्शन करने का सिलसिला शुरू किया, ऐसी सूरत में कांग्रेस पार्टी ने यह मुनासिब समझा कि वह यह दिखाये कि किसान वास्तव में उनके साथ नहीं हैं । शुरू से जो किसानों की मदद कर रहे हैं, किसान उनके साथ हैं । इतने बड़े पैमाने पर . . . (व्यवधान) . . .

संसदीय कार्य विभाग में राज्य मंत्री (श्री सीता राम केसरी) : पीलू मोदी साहब किसान क्या है, यह भी जानते नहीं हैं ।

श्री पीलू मोदी : मैंने खेती की है, क्या आपने भी की है ? आपने खेती दिल्ली में की होगी, घर में खेती नहीं की है ।

SHRI SITA RAM KESARI: You made a very good progress, I know.

SHRI PILOO MODY: It is an intelligent activity.

श्री पी० सी० सेठी : इतने लोग चलकर आये और इतने बड़े पैमाने पर लोग जब आते हैं, चाहे वह किसान रेली हो, चाहे कोई मेला हो और चाहे कोई धार्मिक उत्सव हो । जब लोग इतने बड़े पैमाने पर आते हैं तो सरकार का यह कर्तव्य है कि अगर रेल की विशेष रूप में मांग की जाये तो चलाये । ऐसे वक्त पर इस तरह की रेलें चलाई जाती हैं । अभी बंगलौर के पास श्रवणबेलगोला में उत्सव हुआ, उसके लिए विशेष रेलें चलाई गई । जब रेल में लोग बिना टिकट आयें तो आप लोग इस पर ऐतराज कर सकते हैं । वह अपने पैसे से टिकट लेकर आये उसमें आप क्या ऐतराज कर सकते हैं । जितने लोग ट्रक और मोटर से आये उसका पैसा कांग्रेस पार्टी ने नहीं दिया । यह बात सही है कि जहां तक आम सभा में इंतजाम करने का ताल्लुक है, क्योंकि कांग्रेस पार्टी ने यह मीटिंग बुलाई थी, इसलिए माइक्रोफोन और वहां के इसी तरह के सभी इंतजाम जो है वह करना ही होता है ।

SHRI PILOO MODY: Who says he is not competent? He is very competent. I am satisfied he is very competent.

SHRI N. K. P. SALVE: I am satisfied that you are utterly incompetent.

SHRI SITA RAM KESRI: His competence will never be challenged by you.

श्री पी० सी० सेठी :

I would not have gone into these matters, Sir.

उपसभापति महोदय, क्योंकि आपने माननीय सदस्य को इन विषयों पर भी बोलने के लिए कहा और वह रिकार्ड पर गया है, इसलिए उस रिकार्ड को स्ट्रेट करने की दृष्टि से जो मेरी जानकारी है, उसके आधार पर वस्तुस्थिति से अवगत कराने को कोशिश कर रहा हूं।

मुझे खुशी है कि इन्होंने जो कुछ आंकड़े बताए, एक सौ करोड़, डेढ़ सौ करोड़, इन्होंने जो कुछ यह खबरों के आधार पर बताई, यह वास्तव में बिल्कुल सही नहीं हैं। जो भी लोग आए, जैसा मैंने शुरू में बताया अपने अपने पैसे खर्च करके आए। इसलिए जितना पैसा 10 लाख, 15 लाख, 25 लाख जो भी हो, उसमें सरकारी मशीनरी के दुरुपयोग का कोई प्रश्न नहीं है। जब इतना बड़ा इन्तजाम होता है, मेला होता है, लोग आते हैं, तो उसके लिए सरकारी मशीनरी या पुलिस का इंतजाम रखा जाता है तो यह एक स्वाभाविक खर्चा है। इस तरह का काम सरकार का होता ही हैं।

माननीय उपसभापति जी, माननीय सदस्य ने इसको एक तमाशा बताया। पर वास्तव में यह एक तमाशा तो नहीं था लेकिन यह ऐसा रेला था, रेली नहीं रेला, जो उनके दिल पर लोट गया है और इसको वह विस्मृत नहीं कर पाए हैं।

माननीय उपसभापति महोदय, इन्होंने यह भी कहा कि इनको प्राइम मिनिस्टर के भाषण को सुन करके हंसी आई। मुझे बहुत खुशी है कि कम से कम झा साहब को हंसी तो आई। मैंने तो उनको कभी हंसते हुए देखा ही नहीं।

श्री जे० के० जैन : उन पर तो लोग हंसते हैं।

श्री पी० सी० सेठी : हंसना तो बहुत दूर की बात है, उनके चेहरे पर कभी मुस्कराहट तक नहीं आती। खैर, अगर हाउस में देखें या न देखें लेकिन लाबी में बाहर भी जहां कहीं उनसे मिलने का मौका आता है, उनसे राम-शाम, सलाम होता है तो वहां पर उनके चेहरे पर मुस्कराहट नहीं आती। इसलिए किसी वजह से यह हंसें यह हमारे लिए खुशी की बात है। उन्होंने, प्रधान मंत्री जी ने जो शब्द कहे उनकी आलोचना की है। प्रधान मंत्री ने कोई गर्वोक्ति नहीं की है न अपने भाषण में ऐसी कोई बात कही जिसमें यह कहा जा सके कि उन्होंने गर्व के साथ यह बात कही है। उन्होंने कहा वेनिटी के साथ उन्होंने यह बात कही लेकिन पंडित जी अक्सर जब बोलते थे तो ऐसा नहीं कहते थे। प्रधान मंत्री जी ने साफ कहा कि यह किसी व्यक्ति की रेली नहीं है यह मेरे लिए नहीं है, यह तो किसानों की रली है। सारे भारतवर्ष के किसान यहां पर जमा हुये हैं तो इस प्रकार. . .

श्री शिव चन्द्र झा : किसान रैली नहीं, उन्होंने राष्ट्र की रैली कहा। यह उनके शब्द हैं आप गलत कह रहे हैं।

श्री पी० सी० सेठी : उन्होंने कहा कि . . . (व्यवधान)

श्री धर्मवीर : जब सारे देश की जनता वहां पर थी . . . (व्यवधान)

श्री पी० सी० सेठी : उन्होंने इसको राष्ट्र की रैली कहा। उनका यह कहना इसलिए ठीक था क्योंकि इसमें करीब करीब सब प्रान्तों से, दूर दूर से सभी अंचलों से लोग आये। ऐसी सूरत में एक राष्ट्रव्यापी जहां पर सब लोग इकट्ठे हुये हैं किसान वर्ग और मजदूर वर्ग के लोग इकट्ठे हुये

[श्री पी०सी० सेठी]

हैं तो उसके बारे में जिन शब्दों का इस्तेमाल उन्होंने किया मैं समझता हूं कि उससे ज्यादा माकूल शब्द और नहीं हो सकते। इसलिए माननीय उपसभापति महोदय, जहां तक डीजल के खर्च का सवाल है मैं माननीय सदस्य को बताना चाहूंगा कि जिन लोगों ने भी खर्च किया अपना किया है। डीजल की कोई कमी नहीं है। पैट्रोलियम की कोई कमी नहीं है। यही नहीं मेरे पास आंकड़े हैं और मैं बता सकता हूं। अक्तूबर महीने में हमने जितना दिया उससे नवम्बर में ज्यादा दिया। नवम्बर में जितना दिया उससे ज्यादा दिसम्बर में दिया। दिसम्बर में जितना दिया उससे ज्यादा जनवरी महीने में दिया। और फरवरी में जनवरी से भी ज्यादा दिया। मेरा कहना यह है कि मार्च के करीब-करीब डीजल को हम डीकंट्रोल करने वाले हैं। ऐसी सूरत में माननीय सदस्य को यह शंका नहीं होनी चाहिये कि कोई स्केयर कामोडिटी जिसपर नियंत्रण है उसका आउट आफ दि वे जा कर कुछ अडहाक मात्रा में अलाटमेंट कर दिया है जिससे उसका अपव्यय हुआ है। माननीय उपसभापति महोदय किसान रैली के सम्बन्ध में जो भ्रांतियां माननीय सदस्य के मन में हैं वे उनको दूर करने का प्रयत्न करें तो मैं बहुत आभारी हूंगा।

श्री शिव चन्द्र झा : उपसभापति महोदय यह तो ठीक है लेकिन खर्च कितना कर रहे हैं। कितना खर्च मिनिस्ट्रों के जरिए से हुआ, इसका तो वे हिसाब दे सकते हैं। मंत्रियों के जरिए कितना हुआ, मंत्रियों की गाड़ियां कितनी चलीं, इसका हिसाब तो लगा सकते हैं . . . (व्यवधान)

श्री पी० सी० सेठी : मैं कहना चाहूंगा कि उन तीन दिनों में मेरी गाड़ी का जहां तक सवाल है जितनी चलती है उसके आधी चली होगी। (व्यवधान)

श्री पीलू मोदी : चलने का रास्ता ही नहीं था। . . . (व्यवधान)

श्री शिव चन्द्र झा : बगैर पट्रोल के बगैर डीजल की गाड़ियां नहीं चलती हैं एक मिनिस्टर दिन में कितना खर्च करता है . . . (व्यवधान)

श्री उपसभापति : पहले से आधी सरकारी गाड़ी चलीं, यह तो मंत्री जी कह रहे हैं। (व्यवधान)

श्री शिव चन्द्र झा : पैट्रोलियम का कितना खर्च हुआ, यह आंकड़े तो निकाले जाते हैं, एवरेज आप निकाल सकते हैं? यदि आप नहीं निकाल सकते तो हमें कहिये हम निकाल कर बता सकते हैं? (व्यवधान)

श्री रामानन्द यादव : उपसभापति जी, मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि झा जी के परिवार के लोग किसान रैली का टिकट कटा कर आये थे, यह उनसे पूछ लिया जाए कि उनके घर पर कितने लोग बैठे रहे थे . . . (व्यवधान)

श्री धर्मवीर : कांग्रेस की किसान रैली में झा साहब के यहां कितने लोग ठहरे थे?

श्री रामेश्वर सिंह : उपसभापति जी, माननीय मंत्री जी ने शिव चन्द्र झा जी को जो उत्तर दिया है, झा जी ने कुछ विवरण दिया है, मैं उस विवरण में न जाकर आगे चल रहा हूं। जैसे कि मंत्री जी ने कहा है कि यह किसान रैली नहीं थी, रेला था। मैं यह कह रहा हूं कि यह रैली नहीं थी यह धक्का मुक्कमबाजी थी। यह मेला था, यह एक नाटक था, एक जमघट था और जमघट में जैसा नाटक होता है उसी तरह का नाटक हमारी प्रधान मंत्री जी ने उसमें किया। उन शब्दों का मैं थोड़ा यहां जिक्र करना चाहता हूं।

श्री उपसभापति : उन शब्दों को छोड़िए आप विषय पर आइये ।

श्री रामेश्वर सिंह : अगर आप अभी से हमको टोकाटाकी शुरू कर देंगे . . . . (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : आप दोहराइये नहीं, इसलिए मैं कह रहा हूं ।

श्री रामेश्वर सिंह : बात फिर ठंडी पड़ जाएगी, ठंडी हो नहीं पड़ जाएगी हो सकता है कि बहुत सी बातें जो मुल्क के हित में, आपके हित में, देश के हित में और मंत्री जी के हित में बोलूंगा हो सकता है कि वे छूट जायें। मैं उनको छोड़ना नहीं चाहता हूं । इसलिये मैं चाहता हूं कि कम से कम आप थोड़े समय तक टोकें नहीं इनको टोकने दीजिए इनको मैं उत्तर दे दूंगा, इनसे मैं निपट लूंगा । मैं एक आपको सुन रहा हूं ।

श्री उपसभापति : अखबार मत पढ़िये अपनी बातें कीजिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : मैं एक चीज सुना रहा हूं, जो यह कहते हैं कि प्रधान मंत्री जी ने भाषण दिया ।

श्री उपसभापति : यह भाषण नहीं . . (**व्यवधान**) कंवेंशन में जो बात है इनको पूछते नहीं हैं आप ।

श्री रामेश्वर सिंह : उनका भाषण हुआ था । तो रैली में जो भाषण था वह भाषण नहीं उसका एक अंश में पढ़कर सुना रहा हूं । किसान जमघट को सम्बोधित प्रधान मंत्री के इस भाषण में सबसे ज्यादा जो बात अखरी वह उनकी शासकीय मर्यादा थी । उनके शब्दों में राजा प्रजा का भाव ज्यादा स्पष्ट था । लगता था कि जैसे ये किसान साम्राज्ञ हैं किसानों की रानी हैं वे उनके दर्शन को आये हों और . . . (**व्यवधान**)

श्री रामानन्द यादव : ये क्या आप अनर्गल बातें करते हैं, रामेश्वरजी, अनर्गल बात क्यों करते हैं ?

श्री रामेश्वर सिंह : आपने इनको बहुत लाइसेंस और कोटा दिया होगा, ये लोग क्यों हल्ला करते हैं ? . . . (**व्यवधान**) मेरा कहना है कि हम लोगों की बात को थोड़ा गौर से सुनें और सुनने के लिए उनको कहें (**व्यवधान**) इस किसान रैली में जो एक किसान रैली नहीं थी, यह निर्विवाद हो चुका है, मंत्री जी ने इसको मान लिया है कि यह रेला था । अब किसान रैली न कर इसको रेला कहा जाय । श्रीमन्, इसमें किन-किन साधनों का उपयोग किया गया है । ये कहते हैं कि अगर कोई बिना टिकट आया हो तो आप शिकायत करें । श्रीमन् बिना टिकट ? किसी ने टिकट लिया तब ना हम शिकायत करें, किसी ने टिकट लिया हो नहीं तो शिकायत किससे करें । अब सुनिए श्रीमन्, किसानों को लाने के लिए 133 विशेष रेलगाड़ियों की व्यवस्था की गयी इससे दूसरी अनेक गाड़ियां रद्द हुईं अनेक घंटों देरी से पहुंची । सबसे बुरी स्थिति रास्ते के स्टेशनों पर बनी दुकानों के साथ घटी । जब विशेष रेलगाड़ियां रुकतीं तो उनके भय से मालिक लोग दुकान बन्द करके, जो स्टेशनों पर बैठते हैं, भाग जाते थे . . . (**व्यवधान**)

श्री रामानन्द यादव : यह लोक दल का अखबार है ।

श्री रामेश्वर सिंह : बोलने दीजिए, घबड़ाइये मत, यह लोक दल का तो बोल रहा है और यह आपका है . . (**व्यवधान**) अब आप चलिए । मैं एक सुना रहा हूं । एक भट्टे का मजदूर कहता है कि असल में श्रीमती इन्दिरा गांधी का आत्म-विश्वास डिगने लगा है, यह शब्द भट्टे वाला कहता है कि श्रीमन् हमको तो पैसा दिया ही नहीं गया बल्कि हमको यहां तक कहा गया कि तुम्हारी बीबी को पैसा दे

[श्री रामेश्वर सिंह]

आये हैं तुम यहां पर चलों रैली में तो श्रीमन् . . . (व्यवधान)

श्री उपसभापति : आप प्रश्न पूछ लीजिए । समाप्त करिये ।

श्री रामेश्वर सिंह : एक मिनट सुन लीजिए । जितनी बड़ी तादाद में धन जन की बर्बादी हुई है इस तरीके से जन धन की बर्बादी कभी नहीं हुई थी श्रीमन् यही नहीं . . . (व्यवधान) जो बसें आयीं, 35 हजार बसों का जिक्र किया इन्होंने केवल पंजाब से, श्रीमन्, केवल पंजाब से 2600 बसें . . . (व्यवधान)

श्री हरि सिंह नलवा (हरियाणा) : कितनी ?

श्री रामेश्वर सिंह : 2600 बसें और 1700 ट्रैक्टर पंजाब से, और चार सौ ट्रक पंजाब से . . . (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : काहे को घबरा रहे हो . . . (व्यवधान)

श्रीमती उषा मल्होत्रा (हिमाचल प्रदेश): वे ट्रैक्टर किसके थे। गवर्नमेंट के थे या प्राइवेट थे ?

श्री रामेश्वर सिंह : अब ट्रैक्टर पंजाब से चलता है . . . (व्यवधान)

श्री उपसभापति : आप अपनी बात कहिए अखबार छोड़िये . . (व्यवधान) सवाल पूछिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : यह पूछने नहीं दे रहे हैं . . . (व्यवधान)

डा० भाई महावीर (मध्य प्रदेश) : यह एक मिनट भी इधर से शांति से नहीं सुन रहे हैं . . . (व्यवधान)

श्री हरि सिंह नलवा : मेरा प्वांइट आफ आर्डर है ।

श्री उपसभापति : क्या प्वाइट आफ आर्डर है, आप कहें ।

श्री हरि सिंह नलवा : मेरा प्वाइट आफ आर्डर है . . . (व्यवधान)

श्री उपसभापति : अब बोलने दीजिए ।

श्री हरि सिंह नलवा : यह कभी चरण सिंह की बात करते हैं, कभी बहुगुणा की बात करते हैं . . . (व्यवधान) यह कहां की बात करते हैं . . . (व्यवधान)

श्री उपसभापति : आप बैठ जाइए ।

श्री हरि सिंह नलवा : इनको कोई रैलेवेन्ट बात कहनी चाहिये । वाई ही इज बेस्टिगदी टाइम आफ दी हाउस ?

श्री उपसभापति : नलवा जी आप बैठिए . . . (व्यवधान)

श्री रामेश्वर सिंह : आगे इसमें बताया गया है . . . (व्यवधान)

श्री उपसभापति : आपकी बात हो गई . . . (व्यवधान)

श्री हरि सिंह नलवा : इन्होंने ट्रैक्टर देखा ही नहीं कि ट्रैक्टर होता कैसा है . . . (व्यवधान) चालिए, यह ट्रैक्टर की डैस्क्रिप्शन ही बता दें कि वह कैसा होता है । किसान के साथ जो आपने बहुत मजाक कर लिया है । इस रैली ने आपके मुंह पर तमाचा मारा है कि अब वह जीवन भर आपके कहने में नहीं आ सकता ।

इसीलिए आप हर वक्त जब कभी रैली की बात करते हैं . . . (व्यवधान) उससे डरते हैं । किसान तुम्हारे बात सुन नहीं सकता, अब किसान तुम्हारे साथ चल नहीं सकता । किसान इन्दिरा गांधी का है, किसान कांग्रेस(इ) का है । यह बात आप अपने दिल में बिठा लीजिए और अगर आप वाहियात बात करेंगे, तो

हम आपको बोलने नहीं देंगे । . . . (व्यवधान) . . .

श्री रामेश्वर सिंह: . . . ड्राइवर कहता है कि क्या बतायें, बिलकुल मुफ्त में सवारी ढोकर लानी पड़ी है । पता नहीं कि डीजल के पैसे भी मिलेंगे कि नहीं । हमारा लाइसेंस जब्त करने के लिए हमें थ्रैट किया गया है ।

यह है आपकी सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग । कहते हैं रेल की बात—रेल की बात मैंने आपको सुना दी . . . (व्यवधान)

श्री हरि सिंह नलवा: श्रीमन, डीजल की बात कहते हैं . . . (व्यवधान) . . वह एक करोड़ रूपया जो आपने . . . (व्यवधान) वह कहां गया पैसा . . . (व्यवधान) इतने किसानों के हमदर्द . . . (व्यवधान)

डा० भाई महावीर: वे शांति से बोल रहे हैं, आप शांत क्यों नहीं रहते ।

श्री रामेश्वर सिंह : मैं कोई अनुचित बात नहीं कहना चाहता । लेकिन यह अपने इमान को पैसे पर बेचने वाला आदमी बैठा हुआ है और इस तरह से आकर के सदन की गरिमा को गिरा रहा है । यह देश की सर्वोपरि संस्था है । आप मुल्क की सबसे ऊंची कुर्सी पर बैठे हुये हैं ।

अगर इस तरह से विरोधी दल के लोग के साथ किया जाएगा तो . . .

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Rameshwar Singh, this word will not be recorded.

(Interruptions)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Order, order. Mr. Nalwa, please allow him to continue. You can have your say later on.

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: Sir, on a point of order. Sir, may I request you as well as the Leader of the House who is present here to do something?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: There is no point of order in this.

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI; You just listen to me. Sir, if you want really to deal with the problems we face in the narrow grooves that we are in, I would like to tell Mr Nalwa and other friends that it is for the Deputy Chairman to decide what is relevant and what is irrelevant. You have seen, Sir, that two days back this problem was raised and we had to stage a walk-out. This is the time now to discuss it IX we do not finish it by 1-00 or 1-30 P.M., whatever you may say, this cannot be discussed. You have got ample opportunities to rebut whatever they say. Now, whether the kisans are behind the Congress (I) or the Opposition is a problem to be faced after five years. You have got the mandate and, so, why are you worried?

श्री हरि सिंह नलवा यह कहता है मलिका हैं । इन्दिरा गांधी डयूली इलेक्टेड नेता है । मलिका कैसे कह रहा है ?

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: Nalwaji, to you Mrs. Indira Gandhi may be the leader and to Mr. Rameshwar Singh, Shri Charan Singh may be the leader. But the clash over leadership is not here. He is only mentioning to you whatever he has understood from a Press report. Let us maintain decorum and discuss this in a calm atmosphere. It will be answered and finished within fifteen minutes if you allow us to speak. If you do not allow us to speak, then this will go *on* and God alone with help us.

श्री उपसभापति: श्री रामेश्वर सिंह अब आप समाप्त करिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : मैं समाप्त कर देता।

श्री उपसभापति : आप शब्दों का चयन ठीक ढंग से करिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : संसदीय प्रणाली में जितक बढ़िया शब्दों का प्रयोग हम लोग करते हैं उतना ये लोग नहीं करते । हम गारंटी देते हैं जिस शब्द को आप अनपार्लियामेंटरी समझें उसको आप बेशक प्रोसीडिंग्स से निकाल दें । लेकिन जिस तरीके से सदन के नेता बैठे हुये हैं . . .

श्री उपसभापति : वह हो गया । आप शिक्षा मत दीजिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : मानों शहंशाह पैर फैला कर बैठा हो। यहां पर गुंडई होती रहे और वह देखते रहें । सदन के नेता इस गुंडई को करा रहे हैं अगर हम गुंडई पर उतर आयेंगे तो आप एक दिन सदन में नहीं बोल पायेंगे ।

श्री रामानन्द यादव : गुंडागर्दी का तो आपका पेशा है।

श्री उपसभापति : आप जल्दी समाप्त करिए, 1 बजे हाउस उठ जाएगा ।

श्री रामेश्वर सिंह: मैं पांच दस मिनट में खत्म कर देता हू ।

श्री उपसभापति : उतना समय नहीं है ।

श्री रामेश्वर सिंह: श्रीमन, मेरा कहना है कि जितनी बड़ी तादाद में धन का. .

श्री उपसभापति : वह आप ने कह दिया ।

श्री रामेश्वर सिंह : अपव्यय हुआ है वह तो सामने आ चुका है । जन का जिस तरह उपयोग हुआ है अब वह मैं कहना चाहता हू । आप मुझे को मौका दीजिए । छपरा से ट्रेन आ रही थी । ट्रेन की चेन-पुलिंग की गयी, जबरदस्ती चढ़ने के लिए की गयी ।

श्रीमती सरोज खापर्डे : उपसभापति महोदय, मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही है । आप डीजल के बारे में डिस्कशन के लिए कहा । दुनियां भर की बातें ये कर रहे हैं । हर बात में इन्दिरा गांधी की बात करते हैं । यह हम कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं । बार-बार रेली की बात, बार-बार प्रधान मंत्री जी के बारे में कहते हैं। आप डीजल पर आइए । कोई मना नहीं करता आप को बोलने के लिए । (**व्यवधान**) . . यह क्या तमाशा आप ने लगा रखा है।

Every now and then you are talking about the Prime Minister.

आप ने मजाक बना रखा है । हर शब्द के बाद रैली आती है । प्रधान मंत्री के अलावा कोई बात नहीं आती आप को बोलने के लिए । (**व्यवधान**) आप बोलिए लेकिन ढग से बोलिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन्, मैं तो परेशान हो गया ।

श्री उपसभापति: आप कितना समय और लेंगे ? (**व्यवधान**)

श्री रामेश्वर सिंह : अब उनसे कौन निपटे ।

डा० भाई महावीर: वीमेन ब्रिगेड के सामने वह खड़े ही नहीं हो सकते । (**व्यवधान**)

श्री रामेश्वर सिंह : श्रीमन्, और सबसे तो निपटा जा सकता है, लेकिन . . .

श्री उपसभापति : आप बोलिए और जल्दी ही समाप्त करिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : तो अखबारों में सारी बातें नहीं आयीं । मैंने कल भी कहा था कि अखबार तो पूंजीपतियों के हैं और वह सही बात नहीं छापते । बहुत सी बातें छिपा रखते हैं । लेकिन आप देखिए कि छपरा से ट्रेन आ रही थी . . (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : उसको आप छोड़ दीजिए . . . (**व्यवधान**)

SHRI ARVIND GANESH KUL-KARNI: Is it the policy of the Leader of the House to field two types of teams? One is the female team *to* tackle the male. Whenever he wants the male to be attacked, he fields the female. Whenever men like Rameshwar Singh speak these females. . . (Interruptions). We have to be very careful. You have to protect us because it is not only happening inside the House but in the lobby also. . . (Interruptions). Now I would also request Rameshwar Singh to concluded.

मैं भी कुछ कांट्रीब्यूट करना चाहता हूं । तो इसलिए रामेश्वर सिंह जी, आप कन्क्लूड करिए ।

SHRI N. K. P. SALVE: I will make three categories. There are three categories. One is male, the second is female and the third Rameshwar Singh. *(.Interruptions).*

MR. DEPUTY CHAIRMAN: We will continue it after half-an-hour discussion is over in the evening. (Interruptions) .

श्री रामेश्वर सिंह : मैं क्या क्या करूं? इसको आप रोकिए । इस सबको तो आप ही रोक सकते हैं । मेरा क्या कसूर है । . . . (**व्यवधान**) आप इजाजत दीजिए कि जो मैं बोलूं वह रेकार्ड हो जाये ।

श्री उपसभापति : अब आप कितना समय और लेंगे ?

श्री रामेश्वर सिंह : मैं बहुत जल्दी खत्म कर दूंगा । दो मिनट में खत्म कर दूंगा ।

श्री उपसभापति : आप तीन मिनट ले लीजिए । आपने दो मिनट मांगे हैं, मैं तीन मिनट देता हूं । आप इसमें समाप्त करिए ।

श्री रामेश्वर सिंह : तो श्रीमन, देखिए कि ट्रेन आ रही थी छपरा से . . (**व्यवधान**)

श्री उपसभापति : मुझे लगता है कि आप लोग नहीं चाहते कि यह कालिंग अटेंशन लंच के पहले समाप्त हो । इसलिए यह कालिंग अटेंशन हाफ ऐन हावर डिसकशन के बाद लिया जाएगा और इसके बाद सदन की कार्यवाही ढाई बजे तक के लिए स्थगित की जाती है ।

The House then adjourned for lunch at fifty-eight minutes past twelve of the clock.

The House re-assembled after lunch at thirty-five minutes past two of the clock, Mr. Deputy Chairman in the Chair.

THE BIHAR ATOMIC AUTHORITY BILL. WJg—contd.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, further consideration of the Bihar Atomic Authority BUI,, 1978—Shri Hukmdeo Narayan Yadav.

श्री शिव चन्द्र झा (बिहार) : मैं एक बात कहना चाहता हूं । मुझे इस पर बोलना नहीं है ।

श्री उपसभापति: आप तो बोल चुके हैं ।

श्री शिव चन्द्र झा : इतना ही कहना है कि यह विधेयक बहुत गम्भीर है । बिहार में अटोमिक अथोरिटी खोलने की मांग मैंने इस बिल में उठाई है । बिहार पिछड़ा